पश्चिमी असमिया बोली और इसकी लोक-संस्कृति

Mizanur Hussain Mondal

Atithi pravakta

Hindi vibhag,darrang college, tezpur,dist-sonitpur,

Pin-784001.

भाषा मानव समाज की अभिव्यक्ति का साधन है । भाषा समाज में व्यक्ति के विचारों एवं भावों के संप्रेषण का एक अन्यतम माध्यम है । भाषा एक प्रकार का संकेत है, जिसके माध्यम से एक व्यक्ति अपना मंतव्य दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाता है । भाषा किसी भी समाज की स्थायी संपत्ति नहीं होती । भाषा अर्जित वस्तु है, जिसे विरासत के रूप में हम अपने समाज से अर्जित करते हैं । भाषा का अर्जन अनुकरण द्वारा होता है । अनुकरण के द्वारा ही हम किसी भाषा को सीखते है और उसके माध्यम से अपने विचारों की अभिव्यक्ति करते है ।

असमिया भाषा आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के मागधी अपभ्रंश से विकसित भाषा है । भोलानाथ तिवारी ने आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं को वर्गीकृत करते हुए असमिया भाषा को पूर्वी वर्ग में रखा है । और इसकी उत्पत्ति मागधी उपभ्रंश से मानी है । असमिया असम राज्य की भाषा है इसका साहित्य 14-15 वी शताब्दी से प्राप्त होता है । इसके प्रमुख साहित्यकार-सरस्वती, माधव कंदली, शंकरदेव, माधवदेव, नवकान्त बरुवा आदि हैं ।

इस विषय के अंतर्गत अध्ययन के लिए मैंने जिन बोली का चुनाव किया है उसे ग्वालपड़िया बोली के नाम से जाना जाता है । असमिया भाषा का एक अन्य रूप ग्वालपड़िया उपभाषा है, जो पश्चिम असम में बोली जाती है । इसके संदर्भ में ग्रीयर्सन का मत है कि 'असमिया भाषा की प्रचलित (मान्य) उपभाषा शिवसागर और उसके आस-पास बोली जाने वाली उपभाषा है ।°°°° हम जितना ही पश्चिम की ओर चलते है उतनी ही स्पष्ट रूप में यह उपभाषा मिलती है । मैंने इसको पश्चिम क्षेत्र की असमिया कहा । इस उपभाषा को कामरूप जिले और ग्वालपाड़ा जिले के लोग बोलते हैं ।'(L.S.I, VOL.5 PART 1 page-394)

संस्कृत विद्वान वीरेंद्रनाथ भी ग्वालपड़िया क्षेत्र के लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा को ग्वालपड़िया भाषा मानते है- ' ग्वालपाड़ा में स्थानीय लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा को ग्वालपड़िया भाषा कहते है। ग्वालपाड़ा में इस भाषा को 'देशी-भाषा' कहा गया है ।'(स° विभा भरली, कल्पना तालुकदार, ग्वालपड़िया उपभाषा ; रूप वैचित्र्य, पृ° संपादकीय)

'ग्वालपड़िया' बोली का नाम अंग्रेजी शासन कल आने के पश्चात हुआ है । अंग्रेजी शासन काल में ग्वालपाड़ा जिला का गठन हुआ और इस क्षेत्र में प्रयुक्त बोली को ग्वालपड़िया बोली कहते हैं । ब्रिटिश शासन काल के पहले ग्वालपाड़ा जिला वर्तमान बांग्लादेश के रंगपुर जिले के अंतर्गत था । सन 1826 ईं में ब्रिटिश असम को अपने शासन में लेने के पश्चात सन 1874 ईं में असम राज्य का गठन करके ग्वालपाड़ा जिला का गठन किया ।
ग्वालपाड़ा क्षेत्र पश्चिमी असम के धुबड़ी, ग्वालपाड़ा, कोकराझार, बंगाइगाँव आदि जिलों में फैला हुआ है । असम के इन क्षेत्र के अतिरिक्त यह पश्चिम कामरूप तथा उत्तर बंगाल के रंगपुर और जलपाईगुड़ी में भी आंशिक रूप से बोली जाती है । ग्वालपड़िया उपभाषा के दो रूप है-

1° पूर्वी ग्वालपड़िया उपभाषा

2° पश्चिमी ग्वालपड़िया उपभाषा

पूर्वी ग्वालपड़िया उपभाषा पूर्वी ब्रह्मपुत्र के उत्तर प्रांत से लेकर दक्षिण प्रांत तक बोली जाती है और पश्चिम ग्वालपड़िया उपभाषा भी पश्चिमी ब्रह्मपुत्र के उत्तर से लेकर दक्षिण तक बोली जाती है । इन दोनों उपभाषाओं के रूप इस प्रकार हैं–

पूर्वी ग्वालपड़िया उपभाषा पश्चिमी ग्वालपड़िया उपभाषा

1° मोई भात खांग (मैं भात खाऊँगा) 1° मुइ भात खांग

2° एखन काय आहिल ?(अभी कौन आया ?)2° एखन काई आसिल ?

अतः ग्वालपड़िया उन प्राचीन भाषाओं में से एक है जिन्होंने असम को रंगीन बनाया है ।

लोक-संस्कृति :-

लोक संस्कृति की परम्परा उतनी ही पुरानी है जितनी पुरानी मनुष्य जाति । भारत प्राचीन काल से ही विभिन्न संस्कृतियों का देश रहा है । यह वैविध्य ही भारतीय संस्कृति का सौंदर्य है । संस्कृति का निर्माण विभिन्न तत्वों जैसे – कला, संस्कार, उत्सव, त्योंहार, खान-पान, रहन-सहन, वस्त्र, गीत, संगीत आदि से मिलकर होता है । इसमें लोक और शास्त्र का परस्पर समन्वय एवं आदान-प्रदान भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ।

लोक शब्द का सामान्य अर्थ है- जन, जनता, समूह, लोग, मनुष्य, और आम जन आदि । डाँ° हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक के संबंध में अपने विचार को प्रकट करते हुए लिखा है कि- ''लोक शब्द का अर्थ 'जन-पद' या 'ग्राम्य' नहीं है बल्कि नगरों और गावों में फैली हुई वह समूची जनता है जिनके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियों नहीं है । ये लोग नगर परिस्कृत रुचि सम्पन्न तथा सुःसंस्कृत समझे जाने वाले लोगों की अपेक्षा अधिक सरल और आकृत्तिम जीवन के अभ्यस्त होते हैं और परिस्कृत रुचि वाले लोगों की समूची विलासिता और सुकुमारिता को जीवित रखने के लिए जो भी वस्तुए आवश्यक होती है उनको उत्पन्न करते हैं ।''(3° कृष्णदेव शर्मा, लोक साहित्य ; समीक्षा, पृ° 2) इस प्रकार 'लोक' से आशय किसी भू-भाग में निवास करने वाली उस समान्य जनता से है जिसका जीवन सरल एवं अकृतिम होता है तथा जिसकी कुछ अपनी मान्यताएं एवं विश्वाश होते है जो उन्हें एक सूत्र में बाँधते है । 'लोक' की इन मान्यताओं, विश्वासों, परम्परा, खान-पान, रहन-सहन, रीति-रिवाज, गीत-संगीत तथा भौतिक संसाधनों से ही उसकी संस्कृति का निर्माण होता है, जिसे 'लोक-संस्कृति' कहते है ।

पश्चिमी असमिया लोक-संस्कृति एक प्राचीन लोक संस्कृति है । इस समाज में हिन्दू, मुस्लिम, क्रिस्ताइन, सिख, बौद्ध, जैन आदि अनेक सम्प्रदायों के लोग रहते हैं। इसके साथ ही कोच- राजबंशी, बोड़ो, राभा, मेस आदि जनजातियाँ भी पश्चिमी असमिया समाज का अभिन्न अंग है । इन सभी सम्प्रदायों एवं जनजातियों की एक मिली-जुली सामान्य संस्कृति है, जिसे 'ग्वालपड़िया एवं कामरूपिया लोक-संस्कृति' कहते है । ग्वालपड़िया लोक-संस्कृति मुखतः कृषि प्रधान लोक-संस्कृति है । इस संस्कृति के लोगों का मुख्य पेशा कृषि है । संसार की अन्य लोक-संस्कृतियों की तरह ग्वालपड़िया (पश्चिमी असमिया) लोक-संस्कृति में भी लोक विश्वास, लोक उत्सव, पूजा-पाठ, तंत्र-मंत्र, आदि विशेष महत्व है। जिसका वर्णन नीचे दिया गया है-

1° जन्म ;-ग्वालपड़िया समाज में हिंदुओ में पुत्र जन्म के अवसर पर घर की दीवार को लकड़ी के डंडे से पाँच बार पीटने की प्रथा है और मुसलमानों में बच्चे के कानो में अजान देने का रिवाज है । पुत्र जन्म के विषमदिन में नाई के द्वारा बच्चे का बाल कटवाया जाता है और नाई को 1 किलो चावल 100 ग्राम तेल तथा कपड़ा दान में दिया जाता है । पुत्र जन्म के समय हिन्दू समाज में स्त्रियों द्वारा पुत्र जन्म का गीत भी गया जाता है । गीत की कुछ पंक्तिया इस प्रकार है-

अन्योर हैल दशमाश दशदिन ।

मोर हैल बतसर ।

कोन शनि सोमाइसे ।

मोर गरभेर भीतर ।

2° नामकरण ;- ग्वालपड़िया समाज में नाम का विशेष महत्व होता है । इस समाज में महीने, दिन, आकृति आदि के आधार बच्चे का नाम रखने की परंपरा है ।

(क) महीने के आधार पर ;-कार्तिक महीने में जन्म लेने से 'कातिया' कहता है ।
(ख) दिन के आधार पर ;- सोमवार को जन्म लेने से 'संबारू' नाम रखता है ।
(ग) आकृति के आधार पर ;- जो पैर से विकलांग होता है उसे 'लेंगरा' कहता है ।

3° खान-पान;- चावल, मछली, मांस,एवं शाक पूर्वोत्तर भारत का सामान्य भोजन है, इसके अतिरिक्त ग्वालपड़िया समाज के प्रमुख व्यंजोनो जैसे- सिदल, शूकान माछ(सूखी मछली) एवं नहुल (भीना हुआ चावल) आदि का विशेष महत्व है ।

(क) सिदल ;-'सिदल' सूखी मछलियों से बनती है । सूखी मछली और कच्छु(एक पौधा) के डंथल को ओखल में कूट कर बनाया जाता है । 'सिदल' ग्वालपड़िया समाज में बहुत चाव से खाया जाता है ।
(ख) शूटका ;- जब मछलियों को धूप में सुखाया जाता है तो उसे 'शूटका' कहता है । इन सूखी मछलियों को भूनकर तथा पकाकर खाने की परंपरा है ।
(ग) नहुल ;- भुने हुए चावल को 'नहुल' कहते है । इस नहुल को पिसकर गुड़ के सात भी खाया जाता है ।

4. पूजा-पाठ;- असम एक बहुभाषी प्रदेश है । यहाँ विभिन्न जनगोष्ठी के लोग एक साथ मिलजुल कर निवास करते हैं। - अलग होते हुए सांस्कृतिक दृष्टि से एक ही है-असम के विभिन्न भागो में रहने वाले लोग अनेक बातों में अलग । ग्वालपड़िया समाज इसका उदाहरण है । परिवार व्यक्ति की प्रथम पाठशाला होती है । वही पर रहनसहन-, खान-पान,वेशभ-ूषा, आचारव्यवहार-व्यवहार आदि सीखता है । समाज के इन आचार-, खानपान-, रहनसहन आदि - केंद्र में रखकर व्यक्तिगत और सामूहिक आनंद के लिए सभी देशों में कुछ अनुष्ठान एवं उत्सवों का पालन किया जाता है । ठीक वैसे हीपश्चिमी असम में भी कुछ अनुष्ठान एवं उत्सवों का पालन होता है, जो इस प्रकार है-

(क) मनसा पूजा;-'मनसा' पूजा श्रावण महीने में किया जाता है ।'मनसा' सर्पो की देवी है । साँप से बचने के लिए मनसा देवी की पूजा की जाती है । ग्वालपड़िया समाज में मनसा को 'विषहरि' भी कहते है । इस पूजा में दूध और केला मनसा देवी को चढ़ाया जाता है और फिर दूध और केला को ऐसे स्थान पर रखा जाता है जहा पर साँप का निवास हो। इसके पीछे मान्यता है कि साँप आ कारके उस दूध और केला को खाते है । मनसा पूजा के दिन मेला भी लगता है । 'मनसा पूजा' के दिन गीत भी गाने कि परंपरा है । गीत की कुछ पंक्तिया इस प्रकार हैं -

शुनेक शुनेक ओहे चांदो सदागर
एलाओ जदी वाचिबार चाइस तुई
मोरे पूजा कर ओहे चांदो ओहे सदागर ।।
(मनसा अपने भाई से कहती है कि हे सदागर ! अगर तुम मुझसे बचना चाहते हो तो मेरी पूजा करो ।)

(ख) बाँस पूजा ;- बाँस पूजा का आयोजन बसंत काल में होता है । बाँस पूजा को 'मदन-काम'नाम से भी जाना जाता है । मुस्लिम समाज में इस अनुष्ठान को 'मादार' कहते है । बाँस की वंश वृध्दि के लिए यह पूजा की जाती है । इस पूजा में कुछ सात्विक विचार वाले लोग कमर में अंगोछा बांध कर बाँस को सफ़ेद या लाल कपड़ो से सजाकर खड़ा करते है और फिर उसके चारों ओर ढोल और कांश बजाकर सामूहिक रूप से नाचते गाते है । और फिर उन बाँसो को नीचे उतारकर उन्हे नदी में ले जाकर अच्छी तरह धोकर अगले साल की पूजा के लिए रख देते है । शाम में ठाकुर जी के पूजा के सात इस पूजा की समाप्ति की जाती है ।

5° तंत्र-मंत्र ;- ग्वालपाड़ा समाज में तंत्र-मंत्र आज भी प्रचलित है । तंत्र-मंत्र को ग्वालपड़िया समाज में 'बानमारा' कहते हैं ।भूत प्रेत से लोगों को बचाने के लिए तंत्र-मंत्र, टोना-टोटका का प्रयोग किया जाता है । अगर किसी स्त्री या पुरुष पर भूत-प्रेत का साया पड़ जाता है तो उसे तंत्र-मंत्र के द्वारा ठीक करने का प्रयास किया जाता है। ब्रह्मबान मंत्र का एक उदाहरण इस प्रकार है –

ब्रह्मार आरे जूरील बान ।
बर बर विषय नाशय टान ।।
इस प्रकार ग्वालपड़िया भाषा एवं लोक संस्कृति की अपनी एक विशिष्ट पहचान है और वह अपनी इस विशिष्टता के साथ असमिया भाषा एवं संस्कृति को सम्बृद्ध बना रही है । पश्चिमी असमिया लोक संस्कृति भारत की भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधता के स्वरूप की पहचान कराती है । अतः प्रत्येक संस्कृति प्रेमी एवं विवेकशील मनुष्य का कर्तव्य बनता है कि वह पश्चिमी असमिया भाषा एवं लोक संस्कृति की रक्षा करें और भारत की भाषाई एवं सांस्कृतिक संपन्नता को बनाया रखे ।

संदर्व ग्रंथ-सूची

१°दत्त वीरेंद्रनाथ, ग्वालपड़िया लोकगीत संग्रह, अरुनोदय प्रकाशन, गुवाहाटी,वर्ष2010-

२°दास धीरेन, ओ मोर हाय हस्तीर कन्यारे, श्री रमनी मोहन डेका प्रकाशन, धुबड़ी,वर्ष1994-
३° दास धीरेन, ग्वालपड़िया लोकसंस्कृति आरू लोकगीत, चन्द्रप्रकाशन, गुवाहाटी,वर्ष2013-
४° नाथ द्विजेन, ग्वालपड़िया लोक संस्कृति, अनंत हाजरिका बनलता पानबाजार, गुवाहाटी,वर्ष2013-
५° नियोगी प्रतिमा, प्रतिमा एक सोनाली कंठर उत्ससंधान-, भवानी बुक्स गुवाहाटी,वर्ष2013-
६° भराली विभा, तालुकदार कल्पना, ग्वालपड़िया उपभाषा रूप वैचित्र, चन्द्र प्रकाशन, गुवाहाटी,वर्ष2009-
७° वर्मा शांत, ग्वालपरार जन इतिहास, अशोक पब्लिकेशन, गुवाहाटी,वर्ष2009-
८° शर्मा सुखविलास, भावाइया चटका, सोपान प्रकाशन, कलकत्ता, वर्ष2011-
९° उपाध्याय कृष्णदेव, भोजपुरी लोकसाहित्य का अध्ययन, हिंदी प्रचारक पुस्तकालय काशी,वर्ष1996-
१०° उपाध्याय कृष्णदेव, लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन, इलाहाबाद,वर्ष1995-
११° कृष्णदेव शर्मा, लोक साहित्य ; समीक्षा